दन्यनादिनिधानां (l. °निधनां) सम्यक् न जानन्ति ते देवा विष्णुविरिञ्चिरुद्रसहिता ध्यायंति चित्ते सदा। यज्ञैर्यूपसमन्वितैरनुदिनं युञ्जन्ति यां याचकास्तां विद्यां सकलार्थदामकलितां वन्दे भवानीं मुदा ॥१॥ जनमेजय उवाच ॥ भगवन् भवता प्रोक्तं यज्ञमद्याभिधं (l. यज्ञमंबाभिधं) महत्। सकोम्वा (sá kámbá) कथमुत्पन्ना कुत्र कस्माच्च किंगुणा(:) ॥२॥ कीदृशश्च मखस्तस्याः स्वरूपं कीदृशं तथा। विधानं विधिवद् ब्रूहि सर्वज्ञो सि दयानिधे ॥३॥ ब्रह्माण्डस्य तथोत्पत्तिं वद विस्तरतस्तथा। यत्कृतं (yat°) यादृशं ब्रह्मन्नखिलं वेत्सि भूसुर ॥४॥ etc.

1. Vyása a Janamejaya de natura deorum interrogatus, dialogum refert, quondam ab ipso cum Nárada, 2. a Náradaque cum Brahmane habitum. De creatione. Primus Brahma ortus est. Quem quum Madhu et Kaiṭabha gigantes aggrederentur, subito Vishṇum in Ṣesha serpente jacentem conspexit. Ad eos quum Rudra accessisset, haec deorum trias a Ṣakti (= Máyá, Múlaprakṛiti) quae ab omni aevo exstasse dicitur, ad creandum impellitur. 3. Ejusdem jussu per omnes coelos circumducuntur. 4. Denique deam ipsam adeunt, in ejusque sede (devyáḥ pádanakhe) omnem creationem conspiciunt. Dea a Vishṇu celebratur. 5. Quam quum etiam Ṣiva hymno adorasset, a dea precem magicam obtinet. 6. A Brahmane rogata, Mahámáyá suam ipsa naturam explicat: देव्युवाच ॥ सदैकत्वं न भेदोऽस्ति सर्वदैव ममैनयोः। योऽसौ साहमहं योऽसौ भेदोऽस्ति मतिविभ्रमात् ॥२॥ आवयोरंतरं सूक्ष्मं यो वेद मतिमान्हि सः। विमुक्तः स तु संसारान्मुच्यते नात्र संशयः ॥३॥ एकमेवाद्वितीयं वै ब्रह्म नित्यं सनातनं। द्वैतभावं पुनर्याति काल उत्पत्तुसंज्ञके ॥४॥ यथा (अथा MS.) दीपात्रयोपाधेर्योगात्संजायते द्विधा। छायेवादर्शमध्ये वा प्रतिबिंबं तथावयोः ॥५॥ भेद उत्पत्तुकाले वै सर्गार्थं प्रभवत्यज। दृष्टादृश्यविभेदोऽयं द्वैविध्ये सति नान्यथा ॥६॥ नाहं स्त्री न पुमान्वाहं न क्लीवं सर्गसंक्षये। सर्गे सति विभेदः स्यात्कल्पितोऽयं धिया पुनः ॥७॥ अहं बुद्धिरहं श्रीश्च धृतिः कीर्तिर्मतिः स्मृतिः। श्रद्धा मेधा दया लज्जा क्षुधा तृष्णा क्षमाक्षमा ॥८॥ कांतिः शांतिः पिपासा च निद्रा तंद्रा जराजरा। विद्याविद्या स्पृहा वांछा शक्तिश्चाशक्तिरेव च ॥९॥ वसा मज्जा च त्वक्चाहं दृष्टिर्वागनृता नृता (sic)। परां मध्यां (pará madhyá MS.) च पश्यंति नाड्योऽहं विविधाश्च याः ॥१०॥ किं नाहं पश्य संसारे मद्विरक्तं किमस्ति हि। सर्वमेवाहमित्येवं निश्चयं विद्धि पंकज ॥११॥ एतैर्मे निश्चितै रूपैर्विहीनं किं वदस्व मे। तस्मादहं विधे चास्मिन्सर्गे वै वितताभवं ॥१२॥ नूनं सर्वेषु देवेषु नानानामधरा ह्यहं। भवामि शक्तिरूपेण करोमि च पराक्रमं ॥१३॥ ऐंद्री ब्राह्मी तथा रौद्री वाराही वैष्णवी शिवा। वारुणी चाथ कौमारी नारसिंही च वासवी ॥१४॥ उत्पन्नेषु च कार्येषु देवेषु प्रविशाम्यहं। करोमि सर्वकार्याणि निमित्तं तं (scil. देवं) विधाय वै ॥१५॥ etc. 7. De Purusha et Prakṛiti. De tribus qualitatibus (sáttvika, rájasa, támasa). 8, 9. His qualitatibus quid efficiatur, qualemque invicem rationem habeant, exponitur. 10, 11. De Satyavrata (Uttathya), Devadattae, sacerdotis Koṣalensis, filio, qui a puero hebes et stolidus Ṣaktis adoratione summam sapientiam nactus est. 12. De Ṣaktis cultu. 13. De sacrificio a Vishṇu olim ad Ṣaktim colendam instituto. 14–19. Narratio de Sudarṣana, Dhruvasandhis, Ayodhyae regis, et Manoramae filio. Is a Yudhájite, Ujjayinís rege, post patris mortem regno expulsus, Ṣakti conciliata in imperium restituitur.

Desinit codex in versu 53. capitis undevicesimi.

Codex hujus seculi initio satis accurate exaratus est. (Wilson 110[b].)

137.

Lit. Devan. Charta Europ. Foll. 102. Long. 8½. Lat. 3½. Linn. 8.

Nandíṣvarapuráṇae, sive *Nandipuráṇae* pars, e *Kedárakalpa*[1] desumta, capita 28. (paṭala) continens. Libro *Mahápatha* (via principalis) nomen fuisse, rebus ipsis intelligitur. Incipit: गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुगुरु देवो महेश्वरः गुरुरेकपरं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।१॥ नंदिकेश्वर उवाच पृच्छाम्यहं करोमीश साधकानां हिताय वै महापथेन यास्यंति केचिन्मुक्ता हि मानवाः २ तस्यार्थे हि फलं ब्रूहि सत्यं देव महेश्वरः गच्छंति साधकाः सर्वे स्वयं देहेन शंकरः ३ इति नंदिवचः श्रुत्वा हर्षपूर्णो सदाशिवः श्रूयतां नंदिन्मनसा इत्युवाच सदाशिवः ४॥ ईश्वर उवाच ॥ मनसा कर्मणा वाचा सप्त जन्मानि किल्विषं। कृतं तेषां विनश्यंति ये शृण्वंति महापथं ५ etc.

Dialogo a Ṣiva cum Nandine habito summa beatitudo ita tantum obtineri traditur, si eximia Ṣivae veneratione habita, locus ipsi in Gandhamádana, Himálayae monte, sacer, Kedára dictus, a piis frequentetur, et Kedáreṣam lingam, ibi statutum, adoretur. Quod viri sancti (sádhaka) cujusdam exemplo probatur (cap. 4. usque ad finem libri), qui relicta hominum societate, quamvis mundi cupidinibus continuo tentatus, longam peregrinationem (mahápatha) una cum comitibus suscepit, donec ad Ṣivam pervenit ab eoque pietatis munera accepit. Kedára locus in provincia hodie *Gerhwal* sive *Gurwhal* dicta situs est, in ejusque vicinia montis cacumen, *Mahá Panth* appellatum exstat[2]. Voce *Mahápatha* igitur quatuor res significari puto: 1, peregrinationem illam, quae ab homine pio ad visendum Ṣivae sacellum, in Kedára monte situm, facienda sit, sive spiritualem peregrinationem, qua Ṣivae natura penitus cognosca-

---

[1] इति श्रीकेदारकल्पे नंदिपुराणे etc.

[2] G. W. Traill in Asiatic Researches XVI, 210.